## संपादकीय....

*जोस सरमगो का कथन हैं, Writers make national literature, while translators make universal literature."* **अर्थात् रचनाकार राष्ट्रीय साहित्य का निर्माण करता है जबकि अनुवादक अंतर्राष्ट्रीय साहित्य का निर्माण करता है।**

**आ**धुनिक युग के जिस चरण में हम आज हैं, उसे वैश्विकरण का युग, सूचना प्रौद्यौगिकी का युग, उत्तर आधुनिक युग आदि कहा जा रहा है। इनकी सार्थकता अनुवाद के बिना सिद्ध नहीं हो सकती। इसी क्रम में इस युग को अनुवाद का युग कहा जाता है। विश्व भर में फैले अपार ज्ञान संपदा का प्रचार-प्रसार करने में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। किसी भी भाषा के साहित्य में और ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में जितना महत्त्व मूल लेखन का है, उतना ही महत्त्व अनुवाद का है। सहज और संप्रेषणीय अनुवाद मूल लेखन से भी कठिन काम है। भारत जैसे बहुभाषी देश के लिए अनुवाद की समस्या और भी महत्त्वपूर्ण है। इसकी जटिलता को समझना अपने आप में बहुत बड़ी समस्या है। आधुनिक युग में जैसे स्थान और समय की दूरियाँ कम होती गईं वैसे द्विभाषिकता की स्थितियों और मात्रा में वृद्धि होती गई और अनुवाद का महत्त्व भी बढ़ता गया। बीसवीं शताब्दी में देशों के बीच भाषिक विनिमय बढ़ा है और इस विनिमय के साथ-साथ अनुवाद का प्रयोग और अधिक किया जाने लगा है। बीसवीं शताब्दी और इक्कीसवीं सदी में जीवन का कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है जहाँ पर हम चिन्तन और व्यवहार के स्तर पर अनुवाद के आग्रही न हो। भारत में अनुवाद की परम्परा पुरानी है किन्तु अनुवाद को जो महत्त्व 21वीं सदी के उत्तरार्द्ध में प्राप्त हुआ वह पहले नहीं हुआ था।

भारत के स्वतंत्र होने के बाद देश की आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिति में परिवर्तन आया। भारत के आर्थिक एवं राजनीतिक समीकरण बदलने से विज्ञान एवं प्रोद्यौगिकी का विकास हुआ और विभिन्न भाषा-भाषी समुदायों में सम्पर्क की स्थिति उभर कर सामने आयी। विभिन्न भाषाभाषियों के बीच उन्हीं की अपनी भाषा में सम्पर्क स्थापित कर लोकतंत्र में सबकी हिस्सेदारी सुनिश्चित की जा सकती है।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न देशों के बीच राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में बढ़ती हुई आदान-प्रदान की अनिवार्यता ने अनुवाद एवं अनुवाद कार्य के महत्त्व को बढ़ा दिया है। अनुवाद के कारण अन्य भाषाओं में रचित ज्ञान-विज्ञान तथा चिंतन-मनन को जानने-समझने में आसानी हुई है। अनुवाद न किया होता तो आज संस्कृत, हिंदी तथा भारत की भाषाओं के महान साहित्यकारों की उत्कृष्ट कृतियाँ और विश्व की अन्य भाषाओं में प्रकाशित रचनाएँ अपनी-अपनी भाषाओं के पाठकों तक संकुचित होकर रह जातीं। आधुनिकीकरण, पश्चिमिकरण, औद्योगिकीकरण, जातीय विविधता और बहुसांस्कृतिकता के पाठ का निर्माण करनेवाला मुख्य घटक बन गया है अनुवाद, क्योंकि अंतरराष्ट्रीय संचार में उसकी महती भूमिका है।

तभी तो जॉर्ज स्टेनर कहते हैं, Without translation we would be living in the provinces bordering on silence. अनुवाद के बिना हम चुप्पी की सीमा से लगे प्रातों में रह रहे होंगे।

अनुवाद की इसी महती भूमिका को केन्द्र में रखकर 'आखर' का वर्तमान विशेषांक "**अनुवाद रचना और संरचना"** आपके समक्ष है। इस अंक में जहाँ कन्नड, मलयालम, मराठी, बंगला, उडिया जर्मन तथा कोरियाई भाषाओं से अनुदित रचनाओं के साथ साथ अनुवाद के संरचना पक्ष पर भी कुछ सामग्री आपके अवलोकनार्थ है। आशा है आपको यह अंक पसंद आए।

इति नमस्कारान्ते....

**प्रो. प्रतिभा मुदलियार**

**(प्रधान संपादिका)**